शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

पद्मश्री प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और डॉ.संतोष चौबे समिति शताब्दी सम्मान से अलंकृत

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर द्वारा स्थापित समिति शताब्दी सम्मान से पद्मश्री प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी और आईसेक्ट विश्वविद्यालय तथा सी.वी.रमन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और साहित्यकार डॉ.संतोष चौबे को गरिमामय समारोह में समिति शताब्दी सम्मान से सम्मानित किया गया। साहित्यकारद्वय को सम्मान स्वरूप शॉल, श्रीफल एवं एक-एक लाख रुपये की राशि का चेक प्रदान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि साहित्य अकादमी दिल्ली के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। इंदौर के सांसद श्री शंकर लालवानी विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति के सभापति श्री सत्यनारायण सत्तन ने की। इस अवसर पर प्रो.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य लेखन परिवर्तन की अहिंसक प्रक्रिया है। शब्द हिंसा का विकल्प है। जहां पर शब्द कमजोर हो जाते हैं, वहां हिंसा पनपती है। इसलिए साहित्यकारों को शब्द की साधना का दायित्व गंभीरतपूर्वक निभाना चाहिए। हमें शब्द की आराधना करना चाहिए। डॉ.संतोष चौबे ने कहा कि ज्ञान-विज्ञान के मध्य साहित्य सेतु का काम करता है। एक वैज्ञानिक के पास साहित्यिक दृष्टि होगी तो वह दुनिया का भला कर सकेगा और एक साहित्यिक के पास वैज्ञानिक दृष्टि होगी तो वह कल्पना की नयी से नयी ऊंची उड़ान भरकर मनुष्य को विकास के सोपान पर ले जा सकेगा। हमारे साहित्य का लक्ष्य आंतरिक विकास होना चाहिए। हमारी विश्व की ओर देखने की दृष्टि करुणापूर्ण होना चाहिए। डॉ.माधव कौशिक ने कहा कि विज्ञान जिस तेजी से विकास कर रहा है, उससे लगता है कि साहित्यकारों के अच्छे दिन आने वाले हैं। वैज्ञानिक संसाधनों से जूझती मनुष्य सभ्यता को साहित्य के पास आकर ही सुकून मिलेगा। हमें स्वयं का आकलन करते हुए इस पथ पर तेजी से अग्रसर होने की आवश्यकता है। सभापति श्री सत्यनारायण सत्तन ने कहा कि हमें 'विश्वनाथ' पर बिल्वपत्र चढ़ाते हुए 'संतोष' प्राप्त हो रहा है। इस बात की प्रसन्नता है कि श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति की प्रतिष्ठ के अनुरूप हम साहित्यकारद्वय को सम्मानित कर रहे हैं। इस सम्मान से दोनों ही गौरवान्वित हुए हैं। इस दो दिवसीय आयोजन के प्रथम दिन राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। प्रथम सत्र में संगोष्ठी का विषय था: अनुभवों का अक्षय भण्डार: मालती जोशी का कथा संसार। इस सत्र में मुख्य अतिथि देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.रेणु जैन ने कहा कि मालती जोशी की कहानियों को पढ़कर बढ़े हुए हैं। उनकी कहानियों को पढ़कर व्यक्ति को समस्याओं के हल प्राप्त होते हैं। उनमें बहुत धैर्य था, इस कारण वे ऐसी कहानियां लिख सकीं। वरिष्ठ कहानीकार पद्श्री मालती जोशी के छोटे

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सुपुत्र डॉ.सच्चिदानंद जोशी ने अपनी मां का स्मरण करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को व्याख्यायित किया। उन्होंने मालती जोशी की कहानियों पर पारिवारिक आक्षेप लगाने वाले आलोचकों को उत्तर भी दिया। मालती जोशी ने हमेशा पाठकों को ध्यान में रखकर कहानियां लिखी हैं। उन्होंने आलोचकों पर कभी ध्यान नहीं दिया। वे एकमात्र ऐसी लेखिक रहीं जिन्हें अपनी लिखी कहानियां मौखिक कहने में महारथ हासिल थी। श्री जोशी ने मां पर लिखी अपनी कविता सुनाते हुए कहा कि जब उन्होंने अपनी मां मालती जोशी को यह कविता सुनायी थी, तब उनकी आंखों में आंसूओं को तैरते हुए देखा था। प्रायः वे जज्बाती नहीं होती थीं। वरिष्ठ कहानीकार श्री सूर्यकांत नागर, श्री प्रकाश कांत और डॉ.गरिमा संजय दुबे ने भी मालती जोशी की कहानियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। दूसरे सत्र का विषय था: 21वीं शताब्दी में हिन्दी साहित्य के बदलते प्रतिमान। प्रमुख वक्ता ख्यात साहित्यकार और कला चिंतक श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि परिवर्तन के कारण साहित्य के प्रतिमान भी बदलते रहते हैं। हिन्दी गद्य के विकास के समय यदि जासूसी, तिलस्मी और मनोरंजन प्रधान उपन्यास पसंद किए गए तो मुंशी प्रेमचंद के समय में पहली बार उपन्यास विधा सामाजिक सरोकारों से जुड़ी। आज यदि 21वीं सदी में कमोबेश साहित्य की सभी विधाओं का ढांचा बदल गया है। इसमें स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, हाशिए का समाज जैसे नये विषयों का समावेश हो गया है। वीणा के संपादक श्री राकेश शर्मा और तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला की सहायक प्राध्यापक डॉ.रूपाली सारये ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समिति के उपसभापति श्री सूर्यकांत नागर ने समिति शताब्दी की जानकारी प्रदान की। समिति के प्रधानमंत्री श्री अरविंद जवलेकर ने स्वागत उद्बोधन दिया। अतिथियों का स्वागत न्यासी डॉ.गोपालदत्त ओझा, उपसभापति श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, साहित्य एवं संस्कृति मंत्री डॉ.पद्मासिंह, परीक्षा मंत्री श्री उमेश पारेख, अर्थमंत्री श्री राजेश शर्मा, प्रबंध मंत्री श्री घनश्याम यादव, प्रकाशन मंत्री श्री अनिल भोजे, समसामयिक अध्ययन केंद्र की मंत्री डॉ.मीनाक्षी स्वामी ने किया। इस गरिमामय समारोह में सर्वश्री चंद्रभान भारद्वाज, प्रदीप 'नवीन', सदाशिव कौतुक, रामचंद्र अवस्थी, मोहन रावल, त्रिपुरारीलाल शर्मा, प्रभु त्रिवेदी, पुनीत चतुर्वेदी सहित अनेक गणमान्य साहित्यकार उपस्थित थे। संचालन समिति शताब्दी सम्मान समारोह के संयोजक और शोध मंत्री डॉ.पुष्पेंद्र दुबे ने किया। आभार प्रचार मंत्री श्री हरेराम वाजपेयी ने माना।